REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

काशी नगरी का स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात् शिक्षा में योगदान पर विश्लेषणात्मक अध्ययन

कृष्ण कुमार पाण्डेय[1] , डॉ. रामरतन साहू[2]
1शोध छात्र, इतिहास , डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
2विभागाध्यक्ष (इतिहास) , डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश–

काशी की भौतिक आध्यात्मिक रचना अत्यन्त विलक्षण है। वाराणसी केवल तीर्थ स्थान मात्र न होकर शिक्षा का एक प्रधान केन्द्र थी। जातकों में यहाँ की शिक्षा प्रणाली का उल्लेख है। गुप्त युग में यह नगरी वैदिक शिक्षा का केन्द्र बन गयी तथा गहड़वाल युग में यहाँ के विद्वान विद्यार्थियों को अपने घर में रखकर अपने विषयों में शिक्षा देते थे। ऐसा लगता है कि आरम्भिक मुस्लिम युग में इस शिक्षा क्रम को क्षति पहुँची ,पर अकबर के युग से आज तक काशी नगरी में संस्कृत की शिक्षा अबाध गति से चल रही है। यहाँ के पण्डितों ने अधिकतर प्राचीन ग्रन्थों पर टीकाएँ लिखी आधुनिक दृष्टि से उनका दृष्टिकोण संकुचित नही कहा जा सकता। इसमें सन्देह नही कि संस्कृत भाषा की रक्षा और प्रचार में वाराणसी के विद्वानों का बड़ा हाथ रहा है। यह उन्ही का प्रभाव है कि देश के कोने कोने से विद्यार्थी काशी आकर ज्ञानार्जन करने में अपना गौरव समझते है। काशी धर्म, संस्कृति, दर्शन और साहित्यिक चिन्तन का भी विख्यात केन्द्र है। आदि काल से ही यहाँ अध्येता देश–देशान्तर से विद्यार्जन के लिए आते रहे हैं। रामानन्द ,कबीर, तुलसी, भट्टोजि दीक्षित, भारतेन्दु, प्रेमचन्द्र आदि इसी नगर की उपलब्धियाँ है।

शब्दकुन्ज– आध्यात्मिक, **स्वतंत्रता, पूर्व, पश्चात, विश्लेषणात्मक,** विलक्षण, ज्ञानार्जन, सर्वविद्या, ऐतिहासिकता तथा पौराणिकता इत्यादि।

प्रस्तावना–

काशी की भौतिक आध्यात्मिक रचना अत्यन्त विलक्षण है। वाराणसी केवल तीर्थ स्थान मात्र न होकर शिक्षा का एक प्रधान केन्द्र थी। जातकों में यहाँ की शिक्षा प्रणाली का उल्लेख है। गुप्त युग में यह नगरी वैदिक शिक्षा का केन्द्र बन गयी तथा गहड़वाल युग में यहाँ के विद्वान विद्यार्थियों को अपने घर में रखकर अपने विषयों में शिक्षा देते थे। ऐसा लगता है कि आरम्भिक मुस्लिम युग में इस शिक्षा क्रम को क्षति पहुँची, पर अकबर के युग से आज तक काशी नगरी में संस्कृत की शिक्षा अबाध गति से चल रही है। यहाँ के पण्डितों ने अधिकतर प्राचीन ग्रन्थों पर टीकाएँ लिखी आधुनिक दृष्टि से उनका दृष्टिकोण संकुचित नही कहा जा सकता। इसमें सन्देह नही कि संस्कृत भाषा की रक्षा और प्रचार में वाराणसी के विद्वानों का बड़ा हाथ रहा है। यह उन्ही का प्रभाव है कि देश के कोने कोने से विद्यार्थी काशी आकर ज्ञानार्जन करने में अपना गौरव समझते है।

आज की शिक्षा को केवल ज्ञान देने का साधन ही माना जा रहा है परन्तु शिक्षा जब तक जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती। आज भारत में

फैली सामाजिक बुराइयों, नैतिकता का ह्रास, अनुशासनहीनता, मूल्यों का ह्रास आदि समस्याओं का हल हमारी व्यवस्था में सुधार लाकर ही किया जा सकता है। इसके लिए शिक्षा प्रणाली में भारत की जनता की आवश्यकता एवं आकांक्षा के अनुरूप बदलाव लाना होगा। यह भारतीय विद्वानों, शिक्षाविदों के शैक्षिक विचार एवं प्राचीन साहित्यों में वर्णित शैक्षिक विचारों का अध्ययन कर उसके आधार पर एक नई शिक्षा प्रणाली स्थापित करने पर ही संभव है।

काशी पूर्व से ही विद्या और शिक्षा के क्षेत्र में एक अहम प्रचारक और केन्द्रीय संस्था के रुप में स्थापित है। प्राचीन और मध्यकाल के दौरान उत्तर प्रदेश में उदार परम्परा का संचालन था। वाराणसी हिन्दू शिक्षा केन्द्र के रुप में विश्व विख्यात हुआ। प्राचीन काल से ही लोग यहॉ दर्शन, संस्कृत, खगोलशास्त्र, सामाजिक एवं धार्मिक शिक्षा आदि के ज्ञान के लिये आते रहे हैं। भारतीय परम्परा में प्रायः वाराणसी को सर्वविद्या की राजधानी कहा गया है। वाराणसी में एक जामिया सलाफिया भी है जो इस्लामी शिक्षा केन्द्र है।

अध्ययन का औचित्य–

वर्तमान विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के समय मे धर्म एवं संस्कृति की इतनी निकृष्ट व्याख्या की जा रही है जो असहनीय है जो शनैः–शनैः लोगो के मन मे अनेक असहज विचार बढ़ रहे हैं और जो सहज स्वाभाविक शब्द विलीन होते जा रहे है उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बहुत से ऐसे कार्य हैं जिसका अध्ययन केवल धर्म के आधार पर केवल पौराणिकता के आधार पर नियमन किया जा रहा है अनेक संस्कृतियाँ विकृति की जा रहीं है। काशी का वैभव फिर से दिन प्रतिदिन बढ़ने लगा है वहाँ शिक्षा के लिए वैश्विक स्तर की उच्च संस्थायें और इस नगरी पर बाबा विश्वनाथ की विशेष कृपा मेरे आकर्षण और रुचि का प्रमुख कारण है।

अध्ययन का उद्देश्य –

1. देवनगरी काशी नगरी की ऐतिहासिकता तथा पौराणिकता का अध्ययन करना।
2. शोध देवनगरी काशी की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था, उससे सम्बन्धित तथ्यों एवं साक्ष्यों में प्रमाणिकता का अध्ययन करना।
3. काशी की मध्यकालीन शिक्षा जीवन आदर्शों का अध्ययन करना, जिससे समाज एक नये आयामों अध्ययन करना।
4. काशी की आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन करना।
5. वर्तमान युग की शैक्षिक काशी नगरी की प्रमुख उच्च शैक्षिक संस्थाओं का परिचयात्मक अध्ययन करना।

शोध प्रविधि –

प्रस्तुत शोध में ऐतिहासिक अनुसंधान विधि, वर्णनात्मक नैदानिक विधि, सर्वेक्षण एवं अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया है तथा पुस्तकालयों में ग्रन्थों का अन्वेषण एवं निरीक्षण किया गया है।

शोध कार्य के मुख्यतः चार स्वरूप है–

1. पुस्तकों का अन्वेषण
2. शोध ग्रन्थों का अध्ययन
3. मूर्धन्य विद्वानों से परामर्श
4. प्राप्त संकलित सामग्री का यथोचित लेखन

विषयवस्तु–

शोध आयामों के परिवेश में मेरा शोध कार्य आज की पीढ़ी को नये–नये प्रेरणा पथ, नवचेतना, नूतन वैज्ञानिक शिक्षा एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करेगा जिससे जीवन धारा के नये स्रोत प्रवाहित होंगे।

काशी नगरी की ऐतिहासिकता तथा पौराणिकता–

वाराणसी का प्रारंभिक इतिहास बहुत महान रहा है। काशी की प्राचीनता और ऐतिहासिकता के साक्ष्य विभिन्न धर्मिक एवं ऐतिहासिक ग्रन्थों से प्राप्त होते हैं।काशी वैदिक साहित्य के तीनों स्तरों – संहिता, ब्राम्हण एवं उपनिषद में प्राप्त होती है।

ऋग्वेद में काशी के राजा दिवोदास का वर्णन प्राप्त होता है। अथर्ववेद में वरुणावती नदी का उल्लेख हैं। काशी नगरी का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद की पैप्पलाद शाखा मे प्राप्त होता है। संभवतः इसी नाम से वाराणसी का नामकरण हुआ होगा। शतपथ ब्राम्हण के अनुसार – सत्राजीत के पुत्र शतनिक ने काशी वासियों के पवित्र यज्ञीय घोड़ों का बंधक बना लिया था। गोपथ ब्राहमण में भी काशी कोशल का उल्लेख मिलता है। वृहदारयक उपनिषद में आजाद को काशी अथवा विदेह का शासक बताया गया है। शांखायन और बौध्दायन श्रौत सूत्र में काशी तथा विदेह को परस्पर पड़ोसी बताया गया हैं।

वाल्मीकीय रामायण में काशी के विषय में अनेक महत्वपूर्ण उल्लेख प्राप्त होते हैं। राजा दशरथ ने अपने अश्वमेध यज्ञ मे काशिराज को निमन्त्रित किया और उत्तरकाण्ड में काशीराज पुरुरवा का उल्लेख प्राप्त होता है।

महाभारत के आदि पर्व में काशी राज की पुत्री सर्वसेनी का विवाह भरत के साथ होने का वर्णन मिलता हैं तथा एक अन्य स्थान पर भीष्म पितामह द्वारा काशी राज्य के तीन पुत्रीयों को स्वंयवर से जीत लाने का उल्लेख मिलता है। वनपर्व में काशी के कपिलाहद तीर्थ का उल्लेख मिलता है। परवर्ती महाकाव्यों में भी काशी नगरी का उल्लेख मिलता है।

वाराणसी का वर्णन पुराणों में धार्मिक एवं समृद्ध नगरी के रूप में प्राप्त होता है। शिव पुराण में काशी को बारह ज्योर्ति लिंग स्थानों में से एक बताया गया है। ब्रम्ह पुराण में इस नगर की सीमा वरूणा व असी नदियो के बीच बताई गई है। पद्मपुराण, कर्मपुराण, लिंगपुराण , आदि में वाराणसी का कष्ट निवाराणक सुखदायनी धार्मिक नगरी के रूप में वर्णन प्राप्त होता है। अग्नि पुराण एवं मत्स्य पुराण में पूर्व से पश्चिम दो योजन और उत्तर से दक्षिण आधा योजन बताया गया है।

जैन सहित्य में भी वाराणसी के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। जैन अनुश्रुति के अनुसार पार्श्वनाथ का जन्म वाराणसी में महावीर से 250 वर्ष पहले हुआ था। इनके पिता अश्वसेन वाराणसी के राजा थे। जैन ग्रंथ भगवती सूत्र में वर्णित षोडश महाजनपदो में काशी भी एक महाजनपद है। बौद्ध ग्रंन्थो से वाराणसी के विषय पर प्रकाश पड़ता है। महापरिनिर्वाणसूत्र में तत्कालीन 6 प्रसिद्ध नगरो में वाराणसी का वर्णन प्राप्त होता है । वाराणसी आकर ही गौतम बुद्ध ने सारनाथ में अपना पहला उपदेश दिया था। बुद्धकाल में वाराणसी शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। जातक ग्रंन्थों में वाराणसी के बारे में विशद जानकारी मिलती है। जातकों के आधार पर अल्टेकर ने काशी जनपद का विस्तार बलिया से कानपुर तक माना है। चीनी यात्री फाह्यान और ह्वेनसॉग के विवरण में काशी का उल्लेख मिलता है। हवेनसांग के वर्णन में 7वीं शताब्दी के आरंभ में काशी की धार्मिक एवं सामाजिक स्थिति पर प्रकाश पड़ता है। इसके अतिरिक्त अन्य यात्रा विवरण से वाराणसी के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

बनारस के नामकरण में श्रुति है कि 'बनारस' नामक प्राचीन राज्य वर्तमान काशी की उत्तर सीमा पर था, इसी राज्य के नाम पर 'बनारस' नाम पड़ा है। 'बनारस' वाराणसी का तद्भव रूप है। वाराणसी को पौराणिकग्रन्थों में रुद्रंवास, अविमुक्त, आनन्द–कानन, महाश्मशान, मणिकर्णिका, अलर्कपुरी, गौरीमुख, मदनपुरी आदि से भी पुकारा गया है।

काशी की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था–

प्रागैतिहासिक काल से ही इतनी सजीव संपुष्ट संस्कृति धर्म, शिक्षा और वैभव से पूर्ण नगरी का वर्णन प्राचीन ग्रन्थों में प्राप्त होता है। काशी नगरी में शिक्षा पुरातन है यहाँ शिक्षा की जड़े विदेशी नही हैं। प्राचीन काल से ही काशी वैदिक शिक्षा की केन्द्र स्थली रही है। उपनिषद् काल में काशी के तत्कालीन राजा अजातशत्रु बहुत बड़े ब्रह्मवेत्ता थे। जिनके पास विद्वानों का जमघट लगा रहता था। वैदिक संहिताओं के अध्ययन के लिए काशी में बहुत सी पाठशालाओं का उल्लेख मिलता है। जिनमें ऋग्वेदीय, यजुर्वेदीय, सामवेदीय, अथर्ववेदीय पाठशालाएँ प्रमुख हैं जिन्हें महाराष्ट्र के पेशवाओं का संरक्षण प्राप्त था।

प्राचीनकाल में यहाँ शिक्षा की गुरुकुल आश्रम पद्वति का प्रचलन था जिसमें शिक्षा मौखिक व्याख्यान विधि द्वारा प्रदान की जाती थी गुप्तकाल और उसके बाद से नालन्दा, नासिक, वाराणसी इत्यादि नगरों तक भी शिक्षा केन्द्र स्थापित होने लगे। गुरूकुलों की स्थापना प्रायः वनों, उपवनों तथा ग्रामों या नगरों में की जाती थी। वनों मे गुरूकुल बहुत कम होते थे। अधिकतर दार्शनिक आचार्य निर्जन वनों में निवास, अध्ययन तथा चिंतन पसन्द करते थे। वाल्मीकी, सन्दीपनी, कण्व आदि ऋषियों के आश्रम वनों में ही स्थित थे और इनके यहाँ दर्शन शास्त्रों के साथ–साथ व्याकरण, ज्योतिष तथा नागरिक शास्त्र भी पढ़ाये जाते थे।

इसके अतिरिक्त विभिन्न हिन्दू सम्प्रदायों एवं मठों के आचार्यों के प्रभाव से ईसा की दूसरी शताब्दी के लगभग मठ शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र बन गये। इनमें शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य आदि के मठ प्रसिद्ध हैं। सार्वजनिक शिक्षण संस्थाएं सर्वप्रथम बौद्व विहारों में स्थापित हुई थी।

जैन धर्म की शिक्षाओं पर आधारित जैन शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ। जैन शिक्षा प्रणाली में जैन धर्म एवं दर्शन की शिक्षाओं का प्रभाव था। उत्तर भारत में विशेष काशी नगरी में, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक सभी स्थानों पर जैन शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ। जैन शिक्षा केन्द्रों में जैन धर्म एवं साहित्य के अतिरिक्त ब्राह्मण शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रमों का भी अध्ययन किया जाता था। संस्कृत भी जैन शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का माध्यम बनी रही। स्याद्वाद विद्या के शिवाला स्थित प्रसिद्ध जैन विद्यालय है जो करौंदी में जैन विद्या का अध्ययन केन्द्र है।

बौद्ध शिक्षा के प्रमुख केन्द्र संघ थे। बौद्ध संघ में श्रमणों को धार्मिक और सांसारिक शिक्षा दी जाती थी। बौद्ध शिक्षा पद्वति प्रायः बौद्ध संघ की पद्वति थी। बौद्ध संघ का संगठन गणतांत्रिक प्रणाली पर आधारित था। संघ शब्द से भी यही अर्थ निकलता है। संघ में किसी प्रकार का भेद नहीं था। संघ में गणतांत्रिक मूल्यों के प्रति पूरी आस्था थी। बौद्ध संघ को उच्च वर्ग के समृद्ध लोगों, व्यापारी तथा शासक वर्ग से सहायता मिलती थी। बौद्ध संघ की शिक्षा श्रवणों के हाथ में थी।

काशी नगरी की प्रमुख अन्य शिक्षाएँ – आयुर्वेद शिक्षा, शारीरिक शिक्षा (कुश्ती), योग शिक्षा, तन्त्र साधना, व्यावसायिक शिक्षा, कर्मकाण्डीय शिक्षा, परम्परागत शिक्षा आदि का वर्णन किया गया हैं।

काशी की मध्यकालीन शिक्षा –

पुरातत्व, पौराणिक कथाओं, भूगोल, कला और इतिहास का एक संयोजन, वाराणसी को भारतीय संस्कृति का एक महान केन्द्र बनाता है। धार्मिक संघर्ष और युद्ध के बाद 11वीं शताब्दी से वाराणसी की शिक्षा तथा उन्नति में गिरावट देखने को मिलती है। देवनगरी काशी शिक्षा एंव साहित्य से परिपूर्ण है। इस नगरी में महान भारतीय लेखक एवं विचारक हुए है, कबीर, रविदास, गोस्वामी तुलसीदास जिन्होंने यहॉ रामचरितमानस लिखी। कुल्लुका भट्ट जिन्होंने 15वीं शताब्दी में मनुस्मृति पर सर्वश्रेष्ठ ज्ञात टीका लिखी। रामनगर किले में स्थित सरस्वती भवन में दुर्लभ पाण्डुलिपियॉ, विशेष कर धार्मिक ग्रन्थों का दुर्लभ संग्रह सुरक्षित है। यहॉ गोस्वामी तुलसीदास जी की पाण्डुलिपि की मूल प्रति भी रखी है। यहॉ मुगल मिनियेचर शैली में बहुत सी पुस्तकें रखी है, जिसके सुन्दर आवरण पृष्ठ है। टेबर्नियर ने शिक्षा के क्षेत्र में बनारस की बहुत प्रसंशा की है।

मुगलकाल में काशी नगरी में मकतबों में शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी मदरसों में प्रविष्ट होते थे। यहाँ प्रधानता धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। साथ साथ इतिहास, साहित्य, व्याकरण, तर्कशास्त्र, गणित, कानून इत्यादि की पढ़ाई होती थी। शिक्षकों को नियुक्त करती थी, कहीं कहीं प्रभावशाली व्यक्तियों के द्वारा भी उनकी नियुक्ति होती थी। अध्यापन फारसी के माध्यम से होता था। अरबी मुसलमानों के लिए अनिवार्य पाठ्य विषय था। छात्रावास का प्रबंध किसी किसी मदरसे में होता था। दरिद्र विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति मिलती थी। अनाथालयों का संचालन होता था। शिक्षा निःशुल्क थी। हस्तलिखित पुस्तकें पढ़ी और पढ़ाई जाती थीं। **टेबर्नियर के अनुसार**– वाराणसी गायन एवं वाद्य दोनों ही विद्याओं का केन्द्र रहा है। वाराणसी, भारतीय कला और संस्कृति का पूरा एक संग्रहालय प्रस्तुत करता है। यह देवनगरी संस्कृत भाषा एवं साहित्य का प्रमुख गन्तव्य होने के साथ–साथ संगीत शिक्षा में अग्रणी रहा है क्योंकि संगीत सम्राट तानसेन के दैहित्र वंश के विशिष्ट कलावन्त भूपत खाँ के पुत्र जीवत खाँ मुगल दरबार से काशी आकर संगीत सीखा और उनके कंठ माधुर्य से राजदरबार की शोभा द्विगुणित हो उठी थी। मध्यकाल में यहाँ उदार परम्परा का संचालन था। काशीवासियों का धार्मिक जीवन अक्षुण्ण गतिमान् रहा और काशी धर्म और शिक्षा की केन्द्र स्थली पूर्ववत् बनी रही।

शिक्षा में परिवर्तन यह ईश्वरीय कार्य है। यदि देश का पुनः उत्थान करना है, इसे जगदगुरु बनाना है तो प्रथम शिक्षा में परिवर्तन आवश्यक है। मैकॉले को मालूम था कि शिक्षा को बदले बिना भारत में शासन करना कठिन है। इसलिए उसने सबसे पहले शिक्षा को बदला, उसकी भाषा को बदला। संस्कृत के स्थान पर अंग्रेजी विद्यालय खोले। उसने अपने पिता को पत्र लिखा कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था को बदलने पर उन्हें अत्यन्त खुशी है। लेकिन सही सफलता तब मानी जायेगी कि जब हम यहां नहीं रहेंगे परन्तु शिक्षा व्यवस्था चलती रहेगी। वैसी शिक्षा प्राप्त लोग दिखने में तो भारतीय होंगे लेकिन आचार, व्यवहार, विचार से अभारतीय होगें। **नूरुल्ला व नायक के भाब्दो में**– बनारस संस्कृत कालेज की स्थापना , कम्पनी के नव विजित प्रदेशों की हिन्दू जनता की सद्भावना प्राप्त करने के प्रयास के परिणाम स्वरुप की गई थी।

काशी नगरी की आधुनिक शिक्षा–

आज यह माना जाने लगा है कि ज्ञान की प्रगति को मानवीय करूणा रूपी मूल्य की विशाल प्रगति द्वारा अनुपूरित करना चाहिए। वर्तमान शिक्षा की समस्याओं में मूल्य एवं गुणवत्ता का संकट सर्वाधिक ज्वलन्त हैं। मूल्य विहीन शिक्षा समाज व राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति तथा सन्तुलित व्यक्तित्व वाले नागरिकों के निर्माण करने में असक्षम सिद्ध हो रही हैं। समाज में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों में गिरावट, शिक्षा क्षेत्र में गुणवत्ता की कमी, संवदेनशीलता में गिरावट, वर्तमान शिक्षा प्रणाली की अक्षमता के प्रमाण हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली को भारतीय संस्कृति का आधार देने के लिए पूर्व मध्यकालीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन लाभदायक हैं, क्योंकि यह अध्ययन प्राचीन सांस्कृतिक शिक्षा प्रणाली से विचलन तथा नयी व्यवस्था उन्नयन का समानान्तर एवं संक्रमण काल हैं। विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान होता था तत्पश्चात प्रश्न प्रति प्रश्न पूछे जाते थे। देश के विभिन्न भागों से लोग महत्वपूर्ण शिक्षण संस्थानों में सम्मिलित होते थे तथा एक दूसरे से पारस्परिक रूप से मिलते थे। यह बौद्धिक सम्पर्क निः सन्देह सभी विद्यार्थियों के लिए तथा समाज के लिए लाभप्रद था। इस प्रक्रिया ने न केवल प्रादेशिक सीमाओ को तोड़ा बल्कि विद्यार्थियों की बुद्धि को और अधिक तेज किया।

क. आधुनिक काल से स्वतन्त्रता प्राप्ति तक शिक्षा (1707–1947ई.)–

भारत की पराधीनता के समय भी काशी के संस्कृत ज्ञान एवं अन्य विधाओं को विद्वानों ने अक्षुण्य बनाये रखा। काशी नरेश बलवन्त सिंह (1739 –1770 ई.) के पुस्तकालय से प्राप्त उर्दू ग्रन्थ बलवन्तनामा से राजा बलवन्त के शासनकाल की घटनाओं एवं काशी नगरी की शिक्षा व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है। राजा बलवन्त के दरबार में फलित ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान पं. परमानन्द पाठक ने रामनगर दुर्ग महूर्त शोधन का कार्य एवं उत्कृष्ट ज्योतिष ग्रन्थ प्रश्न माणिथ्य की रचना कार्य सम्पन्न किया। सुप्रसिद्ध कवि रघुनाथ रचित ग्रन्थ काव्यकलाधर, रसिक मोहन, इश्क महोत्सव आदि काशी नरेश बलवन्त की शोभा बढ़ाते थे। कवि रघुनाथ की कृतियों की ठाकुर शिवसिंह सरोज ने मुक्त कण्ठ से प्रसंसा की है। 21 मार्च सन् 1791 ई. में काशीराज महीपनारायण सिंह 1781–1796 ई. ने संस्कृत पाठशाला की स्थापना कर अपनी उदारता, विद्याप्रेम का परिचय दिया। इस महाविद्यालय की उचित देखभाल एवं संचालन के लिए मिर्जापुर जिले का सतासी परगना दान में दे दिया जहाँ सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों की कक्षाएँ निर्विघ्न संचालित होती है।

4 जनवरी 1916ई. काशी नरेश प्रभुनारायण सिंह द्वारा प्रदत्त भूमि में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का शिलन्यास बसन्त पंचमी के दिन हुआ। इसी अवसर पर महात्मा गाँधी ने इस भावी पराक्रम का संकेत अपने ऐतिहासिक भाषण में दिया जिसमें विशेष आमन्त्रण पर पधारे भारत के राजे रजवाड़े , सामन्तों, वायसराय और सरकारी उपाधियों में लदें देशी रियासतों के शासकों को ललकारते हुए भारत की गरीबी का जो वर्णन हुआ उससे गाँधी जी जनता के बीच वन्दनीय हो गये।

डॉ. एनी बेसेन्ट द्वारा समर्पित सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज में बी.एच.यू. का विधिवत शिक्षण कार्य 01 अक्टूबर 1917 में आरम्भ हुआ। सबसे पहले इंजीनियरिंग कालेज का निर्माण फिर आर्ट , साइंस कॉलेज का निर्माण हुआ। 1921 में नये भवन में शिक्षण कार्य प्रारम्भ हुआ। जिसका उद्घाटन 13 दिसम्बर 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स ने किया था। इसी प्रकार भूदान आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्य विनोवा भावे का जीवन परिवर्तन वाराणसी से हुआ।

इसी क्रम में असहयोग आन्दोलन के समय शिव प्रसाद गुप्त ने अपनी सम्पत्ति तथा जमीन दानकर काशी विद्यापीठ की स्थापना की। जो बाद में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के नाम महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वाराणसी का यह मानित राजपत्रित विश्वविद्यालय रहा है। यहाँ गाँधी जी के सिन्द्धातों का पालन किया जाता है। स्याद्वाद विद्या के शिवाला स्थित प्रसिद्ध जैन विद्यालय है करौंदी में जैन विद्या का अध्ययन केन्द्र है। यहाँ कई शिक्षण संस्थाएँ है। जिनमें विभिन्न प्रमुख शिक्षा भारत का संस्कृत पाठशाला, महाविद्यालय, विद्यालय, मदरसें सम्मिलित है। यहाँ महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, आई.आई.टी. तथा जामिया सल्फिया मदरसा, केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय है।

ख. स्वतंत्रता के पश्चात् आधुनिक शिक्षा–

प्रत्येक राष्ट्र के विकास में प्राथमिक शिक्षा का अत्यधिक महत्व है। प्राथमिक शिक्षा ही वह आधार है जिस पर शिक्षा की सम्पूर्ण संरचना निर्मित हो पाती है। प्राथमिक शिक्षा रुपी प्रथम सोपान पर आरुढ़ होकर ही मनुष्य अपने मानवीय एवं राष्ट्रीय उद्देश्यों को पूरा करता है। भारतीय संविधान में 6–14 वर्ष के आयु वर्ग के सभी बच्चो को निशुल्क एवं आनिवार्य शिक्षा देने की बात कही गयी हैं।

काशी में बेसिक शिक्षा परिषद से जारी सूची के अनुसार – मान्यता प्राप्त हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के 1013 प्राक्षमिक और 477 उच्च प्राथमिक विद्यालय संचालित हो रहे है। जिनमें कुल 5732 शिक्षक–शिक्षिकाए और 1780 शिक्षामित्र कार्यरत् है। परन्तु अभी भी शिक्षकों की कमी है। शिक्षक छात्र के 1:30 के अनुपात का मानक पूरा नही हो सका है। काशी नगरी के कुछ प्राथमिक विद्यालय इस प्रकार हैं– 1. धर्मदेव विद्यापीठ कन्या इण्टरमीडिएट कालेज संजय गाधींनगर कालोनी चौकाघाट। 2. बेसिक प्राथमिक विद्यालय ढेलवरिया चौकाघाट ।

वैदिक युगीन एवं मध्ययुगीन शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा के केवल दो ही स्तर थे– प्राथमिक एवं उच्च। भारत में माध्यमिक शिक्षा का सूत्रपात करने काश्रेय यूरोपीय मिशनरियों को प्राप्त है जिन्होने 18वीं शताब्दी के अन्त में देश के कुछ हिस्सों में माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना की । माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा के बीच सेतु का काम करती है जिसके द्वारा 14–18 वर्ष आयु वर्ग वाले विद्यार्थी माध्यमिक शिक्षा पूर्ण कर उच्च शिक्षा में जाने की तैयारी करते है। वास्तव में माध्यमिक शिक्षा, शिक्षा का वह स्तर है जो एक ओर तो बच्चों को जीवन के निकट लाता है और दूसरी ओर उन्हें जीवकोपार्जन के योग्य बनाता है। माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद ही जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अवसर उपलब्ध हो पाते हैं।

काशी नगरी में यू.पी.बोर्ड के माध्यमिक विद्यालयों की संख्या लगभग 414 है। यहाँ माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के प्रमुख तीन बोर्ड है – यू.पी. बोर्ड, सी.बी.एस.ई. बोर्ड, आई.सी.एस.ई. बोर्ड। इन बोर्डो से सम्बद्व विभिन्न कालेज काशी में संचालित हो रहे है।

काशी नगरी की साक्षरता दर–

जिला	कुल साक्षरता			पुरुष			महिला		
वाराणसी	1991	2001	2011	1991	2001	2011	1991	2001	2011
	51.88	67.09	75.6	66.66	83.66	83.8	35.00	48.59	66.7

स्त्रोत– सेन्सस ऑफ इण्डिया पार्ट II उत्तर प्रदेश।

उपरोक्त सारणी के अनुसार यह स्पष्ट है कि काशी नगरी की साक्षरता दर लगातार वृद्धि हो रही है और शिक्षा का विकास हो रहा है।

काशी नगरी की प्रमुख उच्च शैक्षिक संस्थाएँ–

भारत में ''विश्वविद्यालय'' का आशय किसी केन्द्रीय अधिनियम, किसी प्रान्तीय अधिनियम अथवा किसी राज्य अधिनियम के द्वारा स्थापित अथवा निगमित विश्वविद्यालय से है जिसमें इस अधिनियम कें तहत इस

सम्बन्ध में बनाए गए विनियमों के अनुसार उस सम्बद्ध विश्वविद्यालय के परामर्श से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थाएं शामिल हैं। प्रतिवर्ष देश – विदेश के लाखों छात्र मुख्यतः अपनी स्नातकोत्तर की पढ़ाई के लिए इनमें प्रवेश लेते हैं। जबकि लाखों छात्र बाहरी दुनिया में कार्य करने के लिए इन संस्थाओं को छोड़ते हैं।

क. काशी हिन्दू विश्वविद्याालय :–

काशी हिन्दू विश्वविघालय विश्वप्रसिद्व उच्च शिक्षा का अद्वितीय विश्वविद्याालय है। यह विश्वविद्यालय संसार मे अति प्रतिष्ठित उच्च शिक्षा संस्थान है जिसकी स्थापना महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी द्वारा सन् 1916 ई. में की गई थी। यह एक स्वायत्त शासी उत्कृष्ट संस्थान हैं। इसके विजिटर महामहिम राष्ट्रपति जी है यह एशिया का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने अपने प्रभावशाली एवं परोपकारी अतीत के साथ ही भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

विश्वविद्यालय 4 संस्थानों (चिकित्सा विज्ञान संस्थान, प्रौद्योगिकी संस्थान एवं कृषि विज्ञान संस्थान पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान), 16 संकायों, 132 विभागों, 1 महिला महाविद्यालय (वोमेन्स कॉलेज) और 5 अंतर्विषयों स्कूलों (द्रव्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, जैव–चिकित्सकीय अभियांत्रिकी, जैन रसायन अभियांत्रिकी, जैव–प्रौद्योगिकी व जीवन विज्ञान) से मिलकर बना है। अनेक विभाग अपने उच्च शोध उपलब्धियों के लिए उच्चीकृत किये गये है, इनमें 18 यूजीसी विशेष सहायता कार्यक्रम (उच्चानुशीलन केन्द्र 8 विभागीय अनुसंधान सहयोग 10), यूजीसी मान्यता प्राप्त केन्द्र/कार्यक्रम 4, अन्य कार्यक्रम 9 और डी एस टी एफ आई एस टी (विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी उन्नयन कोश) कार्यक्रम 7 सम्मिलित है। नगर में स्थित 4 महाविद्यालयों को काशी हिन्दू विश्वविघालय की सुविधाओं के लिए स्वीकृत किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा बच्चों के लिए 3 विद्यालयों का संरक्षण भी किया जाता है।

ख. महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ वि□वविद्यालय–

इसी क्रम में असहयोग आन्दोलन के समय शिव प्रसाद गुप्त ने अपनी सम्पत्ति तथा जमीन दानकर काशी विद्यापीठ की स्थापना की। जो बाद में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के नाम महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वाराणसी का यह मानित राजपत्रित विश्वविद्यालय रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन में काशी विद्यापीठ की अहम भूमिका थी। शिव प्रसाद गुप्ता के अथक प्रयास के फलस्वरुप यह विद्यापीठ 10 फरवरी 1921ई. को महात्मा गांधी के कर कमलों से उद्घाटित हुआ। स्वाधीनता, स्वदेश–प्रेम, लोक–सेवा, अध्यात्म विद्या की शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से देना काशी विद्यापीठ का उद्देश्य है। सन् 1921–47 ई. तक विद्यापीठ का इतिहास राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्राप्ति के इतिहास से गहराई से जुड़ा रहा। शिक्षाविद् शंकर शरण श्रीवास्तव ने काशी विद्यापीठ की स्थापना से अब तक का संक्षिप्त विवरण दिया। सुखद् बात यह है कि स्वयं लेखक देवदत्त डोभालकर भी उस प्रारुप के हस्ताक्षर कर्ताओं में एक हैं। उस दस्तावेज में अंग्रजों से पूर्व प्रचलित भारतीय शिक्षा प्रणाली की व्यवस्था की सराहना की जा रही हैं। उपरोक्त विवेचन से इतना स्पष्ट है कि राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन में विद्यापीठों, छात्रों, अध्यापकों की भूमिका उल्लेखनीय थी। काल प्रवाह में बहते हुए ये विद्यापीठ मर्यादा–रहित जरुर हो गये है फिर भी आन्दोलन के काल–खण्ड प्रस्तुत शिक्षाविदों के शिक्षा विदों के शिक्षा–विषयक विचार–दर्शन भी प्रासंगिक है। वर्तमान शिक्षाविद् उनसे प्रेरणा लेकर इस राष्ट्र को एक नयी दिशा दे सकते हैं।

ग. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय –

21 मार्च सन् 1791 ई. में काशीराज महीपनारायण सिंह 1781 –1796 ई. ने संस्कृत पाठशाला की स्थापना कर अपनी उदारता, विद्याप्रेम का परिचय दिया। कुछ इतिहासकार मानते है कि –गवर्नर जनरल लार्ड कार्नवालिस ने इस संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना 1791 में की थी। यह वाराणसी का प्रथम महाविद्यालय था। इसका भवन गाथिक शैली की अद्भुत संरचना के लिए प्रसिद्ध है। महाराज महीपनारायण सिंह की प्रशस्ति में ब्रहमदत्त कवि ने अपने अलंकार ग्रन्थ दीप प्रकाश में तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था का वर्णन किया है।

काशी में निवास करते हुए कृपा राम जी महराज द्वारा यह अनुभव किया आर्य समाजी विद्यार्थियों को अनेक कठिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ रहा है। उनके रहने खाने का उचित प्रबन्ध नही है काशी के पौराणिक पण्डित उन्हें पढ़ाने में रुचि नही लेते है। विद्यार्थियों की इस समस्या का समाधान करने के लिए कृपा जी ने काशी में एक संस्कृत पाठशाला की स्थापना की। इस संस्थान की संस्कृति उपाधियाँ संस्कृति के अध्यापन के क्षेत्र में राजकीय सेवाएँ मान्य थी। संस्कृत भाषा के प्रचार–प्रसार में इसकी महती भूमिका रही है। इससे सम्बद्व महाविद्यालय उत्तर प्रदेश के बदायूँ, अलीगढ़, अयोध्या, मेरठ, मैनपुरी, इलाहाबाद, गाजियाबाद आदि जिलों एवं हरियाणा तथा दिल्ली में स्थित हैं।

घ. केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय –

परम पावन 14 वे दलाई लामा एवं भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु जी के प्रयासो से सन् 1967 मे तिब्बती तथा सीमान्त हिमालय क्षेत्र के विद्यार्थियो के प्रशिक्षण एवं शिक्षा के उद्देश्य से स्थापित केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान एक अद्भुत विश्वविद्यालय है वाराणसी के संघटक सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के रुप में शुभारम्भ करके सन् 1977 मे केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान के नाम के साथ विश्वविधालय ने भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन स्वायत्त संस्थान का दर्जा प्राप्त किया विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 5 अप्रैल 1988 को धारा 3 के अन्तर्गत की गई अनुशंसा के आधार पर केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान को भारत सरकार ने विश्वविद्यालय के अद्वितीय कार्य पद्वति एवं उपलब्धियों के आधार पर मान्य विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया।

यह विश्वविद्यालय अपने शोध विद्यार्थियों के साथ निर्धारित विषयों के अध्ययन– अध्यापन एवं देश–विदेश से आने वाले शोधार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए आगे बढ़ रहा है। बौद्व एवं बौद्वोत्तर भारत के दार्शनिक विचारधारा बौद्व एवं पाश्चात्य दार्शनिक विचारधारा एवं वैज्ञानिकों के बीच विचार विमर्श एवं आपसी संवाद के लिए प्रबल मंच प्रदान करता है।

च. काशी नगरी के प्रमुख कॉलेज–

इसके अन्तर्गत काशी नगरी के उच्च शिक्षा से सम्बन्धित कॉलेजों और महाविद्यालयों का वर्णन किया गया है। जिनमें प्रमुखतः मेडिकल कॉलेज, फार्मेसी कॉलेज, मास कम्यूनिकेशन के कॉलेज तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों से सम्बद्व महाविद्यालय आदि हैं।

उपसंहार –

ब्राह्मण शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का आधार भारतीय संस्कृति का सुचिन्तित एवं उत्कर्ष प्राप्त व्यवस्थित जीवन दर्शन था। जीवन के प्रति स्पष्ट दृष्टि थी। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के रूप में जीवन के लिए ये ही स्पष्ट लक्ष्य थे। मनुष्य भौतिक एवं आध्यात्मिक लक्ष्य में सन्तुलन बनाये रखने के लिए प्रयास करता था। भौतिक जीवन की अपेक्षा आध्यात्मिक जीवन को अधिक महत्व दिया जाता था। वेद जैसा श्रेष्ठ साहित्य, उपनिषद, जैसा दर्शन, पुराण एवं गीता जैसे ग्रन्थ इस शिक्षा प्रणाली के आधारभूत पाठ्य विषय थे। जो उच्च एव व्यावहारिक जीवन मूल्यों को समाहित किए हुऐ थे।

पूर्व मध्यकाल और मध्यकाल में शिक्षा प्रणाली की एकरूपता के अभाव में समाज, राजनीतिक व्यवस्था एवं आर्थिक क्षेत्र में एकता एवं शक्ति में कमी आयी तथा टूटने एवं विखराब की प्रवृत्ति के बढ़ने के कारण इस काल में विदेशी मुसलमानों का आक्रमण पश्चिमोत्तर भारत से प्रारम्भ हुआ। भारतकी स्वतंत्रता धीरे–धीरे समाप्त होती गयी। गौरवमयी भारतीय संस्कृति विदेशी मुस्लिम आक्रान्ताओं के अत्याचार को सहन करने में सक्षम न हो सकी। मुस्लिम आक्रमणकारियों ने भारतीय शिक्षा केन्द्रो, शिक्षकों पुस्तकालयों को नष्ट कर दिया। जिससे भारत वर्ष की उन्नति सम्पूर्ण विश्व के संदर्भ में अवनति के रूप में परिवर्तित हो गयी।

आज शिक्षा प्रणाली का ध्येय बहुत गिरा हुआ है। अंग्रेजी शासन काल में शिक्षा का उद्देश्य केवल यही रह गया था कि एक व्यक्ति पढ़ लिखकर लिपिक कार्यालयाधिकारी बन जाए, परंतु खेद है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी शिक्षा प्रणाली में कोई अंतर नहीं हुआ है। हम पहले अंग्रेजों को ताकते थे और अब रूस और अमेरिका को। आज एम.ए. और बी.ए. जैसी उपाधियों का कोई महत्व नहीं रहा है। लोग उनका मखौल उड़ाते

हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली के दुर्गुणों के कारण हमारे समाज और राष्ट्र का पतन हो रहा है। इसके विपरीत यदि प्राचीन शिक्षा प्रणाली पर दृष्टिपात किया जाए तो उसमें अनेक गुण मिलेंगे। आज हमें अपनी शिक्षा प्रणाली में क्रांति लाकर उसे आदर्श रूप में डालना चाहिए ताकि हम सब लोग अपने लक्ष्य एवं उद्देश्य का ध्यान रखते हुए समाज और राष्ट्र का कल्याण कर सकें। काशी नगरी की प्राचीन शिक्षा संस्कृति एवं संस्कार से मूल्य शिक्षा का विकास होता रहा है। जो आज वर्तमान तकनीकी युग की शिक्षा में अदृश्य होती जा रही है। जो वर्तमान में अनुकरणीय है। इस संदर्भ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने नैतिक और मूल्य शिक्षा को सभी पाठ्यक्रमों में एक विषय के रूप में अनिवार्य रूप से अध्ययन करने का आदेश पारित किया है। जो एक सराहनीय कार्य है।

सन्दर्भ सूची –

- उपाध्याय, डॉ. बलदेव, 1983, काशी की पाण्डित्य परम्परा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- काणे, पी.वी.,1975, धर्मशास्त्र का इतिहास, हिन्दी समिति ग्रन्थमाला लखनऊ।
- कोठारी, सी.आर., 2009, शोध प्रविधि, किताब महल इलाहाबाद ।
- चलचित्र बनारस – एमिस्टिक लव स्टोरी 2006, वाराणसी और उनके भारतीय परम्पराओं में स्थान पर आधरित हिन्दी चलचित्र।
- बांके बिहारी, 2005, प्राचीन भारतीय धर्म, भवदीय प्रकाशन, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश ।
- बाजपेयी, कृष्णदत्त, 1957, उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक विभूतियां, शिक्षा–विभाग उत्तर प्रदेश
- बाजपेयी, कृष्णदत्त, 1977 वाराणसी की प्राचीनता ।
- मजूमदार, 1983, गॉड ऑफ सारनाथ, काशी नगरी एक रूप अनेक, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार ।
- मणि, दीनदयाल, 2009 काशी वैभव या वाराणसी वैभव, राजपाल एण्ड संस
- मुखर्जी, विश्वनाथ , 1958, बना रहे बनारस, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी।
- मिश्र, कोशल किशोर, 1986 ई., सन्मार्ग, वाराणसी विशेषांक, सन्मार्ग कार्यालय वाराणसी।
- मिश्र, भगवती शरण, 2002, पावक, आसाराम एण्ड संस
- "21वीं सदी में काशी " 17 फरवरी 2016, सुरेश शुक्ला
- विश्वकर्मा, ईश्वरी शरण, 1989, काशी की जीवन शैली, अखिल भारतीय इतिहास संकलन समिति, काशी प्रान्त।
- शुक्ल, बैकुण्ठनाथ, 1986 वाराणसी वैभव, शारदा संस्थान, वाराणसी उत्तर प्रदेश।
- शुक्ल, शिव वरण, 1998 पर्याकृतिशास्त्रम् (संस्कृत में), सेन्टर फॉर ग्लोबल इन्वायरमेंट कल्चर।
- शुक्ल, बैकुण्ठनाथ, 1998, काशी दर्पण, शारदा संस्थान वाराणसी उत्तर प्रदेश
- शुक्ल, कुबेरनाथ, 2000, वाराणसी वैभव, बिहार,राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
- संस्करण द्वितीय, 1909,द् इण्डियन एम्पायर,द् इम्पीरियल गैजेटियर ऑफ इण्डिया।
- सिंह, राजेश कुमार, 2003, काशी में शिक्षा व्यवस्था, अखिल भारतीय इतिहास संकलन समिति, काशी प्रान्त ।
- सिन्हा, रामबचन, 1973, वाराणसीः एक परम्परागत नगर, भारतीय विद्या प्रकाशन वाराणसी।
- hindi.kashiyana.com
- shriprabhu.blogspot.com/2010/04/blog-post_67.html
- historybhu.blogspot.com
- www.upgov.in